श्री टी० अंजैया : तमाम फेक्टरीज में जो स्टैंडिंग आर्डर्स बनाए हुए हैं उस पर आप जानते हैं अगर चलना शुरू कर देंगे तो और डिस्प्यूट पैदा होंगे, लाक-आऊट होंगे . . .

श्री पीलू मोदी : ऐसे खराब कानून बनाने क्यों हों ?

श्री टी० अंजैया : आप लोगों ने बनाए हैं। आप लोगों ने तमाम फ्रीडम दे रखी थी, हड़ताल करने की फ्रीडम दे रखी थी (*Interruptions*) जब चाहो हड़ताल करने की फ्रीडम दे रखी थी तो इसमें हम क्या कर सकते हैं ?

श्री पीलू मोदी : आप लोगों का क्या मतलब होता है ? क्या आप चार पैर पर चलते हैं ? आप भी दो पैर पर चलते हैं। कम से कम हम लोग तो बोलिए ।

(*Interruptions*)

श्री सभापति : अब मैं यह नहीं देखना चाहता कि किस के कितने पांव यहां पर हैं।

SHRI NARSINGH NARAIN PANDEY: Is the Minister aware, as he has rig'atly stated, that the Standing Orders which have been framed by various State Governments are not in consonance with the spirit of what he has explained and stated just now? I wanted to know whether the Minister would call a Labour Ministers' conference and have a model standing order to meet the needs of the workers so that he may be just able to solve all these problems in the private sector.

MR. CHAIRMAN: I think that is answered.

SHRI NARSINGH NARAIN PANDEY: I am asking whether the Minister is going to call a State Labour Ministers' conference.

श्री टी० अंजैया : क्वेश्चन में मैंने जो जवाब दिया है इसमें अब कोई बात नहीं रही है। क्योंकि ट्रिब्यूनल में चला गया है। अब जो प्रासीक्यूशन करने का सवाल रहा है। जो स्टैंडिंग आर्डर है इसमें मैंने कहा कि प्रासीक्यूशन का जो काम होता है, अगर वर्कर्स के इन्टरेस्ट में होता है तो हम तैयार हैं। अगर मैंनेजमेंट पर, एब्सेंटिज्म पर लीव आदि पर जो दुनिया की बातें हैं अगर उसके ऊपर होता है तो उसमें तो वे रोजाना शो काज नोटिस इश्यू करते हैं। अब हम चूंकि लेबर लाज बदलना चाहते हैं इसलिए यह लेबर मिनिस्टर्स की कान्फ्रेंस में डिस्कस किया गया था, लेबर लीडरों से बातचीत की जा रही है, कंसलटेटिव कमेटी में भी हमने बातचीत की है आनरेबल मेम्बर भी उसमें मौजूद थे, इसके अंदर हम इन्डस्ट्रियल डिस्प्यूट एक्ट, इंडस्ट्रियल ट्रिब्यूनल की तमाम चीजें बदलना चाहते हैं ताकि वर्कर्स और मैनेजमेंट में रोजाना झगड़ न रहे बल्कि एक अण्डरस्टेंडिंग रहे और उनके मसले आरबिट्रेशन बोर्ड से हल हों। हम ये कोशिश कर रहे हैं।

A.C. sleeper Coach in the Avadh-Tirhut Mail

*244. SHRI P N. SUKUL: Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) what are the reasons for not providing a quota of berths/sleepers from Katihar in the Avadh-Tirhut Mail of NER; and

(b) by when Government propose to provide A. C (sleeper) Coach in the said train which takes almost two days to complete its journey between Lucknow and Gauhati?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI C. K JAFFAR SHARIEF): (a) Katihar Station has been provided quotas of second class sleeper berths/seats by A. T. Mail. There is no justification for providing quotas in the first class.

(b) The A.C. second sleeper coach on the Metre Gauge is so far not

available and the design is under development at present.

श्री पी० एन० सुकुल : क्या माननीय मंत्री जी बतायेंगे कि उत्तरी पूर्वी रेलवे तथा पूर्वोत्तर सीमा रेलवे की किन-किन रेलों में ए० सी० तथा ए० सी० चेयर की सुविधा उपलब्ध है ?

SHRI C. K. JAFFAR SHARIEF: Sir, this does not arise from the question. The question is very specific and concerns the Katihar station. Therefore, I would require a separate notice for this.

श्री पी० एन० सुकुल : हमारे इलाहाबाद या वाराणसी नगरों में कोई भी सुपर फास्ट गाड़ी या नयी गाड़ी जो सीधे गौहाटी जाती हो, उसकी व्यवस्था नहीं है। क्या मंत्री जी इलाहाबाद या वाराणसी से गौहाटी के लिये कोई सुपर फास्ट रेल पूर्वोत्तर रेलवे में चलाने की व्यवस्था करेंगे ?

श्री कमलापति त्रिपाठी : मान्यवर इससे कोई यह सवाल पैदा नहीं होता है।

श्री सभापति : नहीं होता है। मगर कौन सी ट्रेन वहां से जाती है।

श्री कमलापति त्रिपाठी : ऐसे तिनसुकिया जो जाती है, मान्यवर, वह इलाहाबाद से जाती है।

श्री सभापति : अपनी रेल का इंतजाम कर रहे हैं।

श्री पी० एन० सुकुल : छोटी लाइन पर . . .

SHRI SAWAISINGH SISODIA: Sir, providing an AC sleeper in t'he Tirhut mail cannot be an isolated decision. I would like to know from the hon. Minister...

SHRI PILOO MODY: Everybody wants for every place.

SHRI SAWAISINGH SISODIA: ... whether the Railway Board has considered this question as to in what trains, either the mail or the express, the AC sleeper should be provided, and whether this broad-based decision has been taken by the Railway Board or not. And then the question of this particular train can arise.

श्री कमलापति त्रिपाठी : मान्यवर, ए० सी० स्लीपर कोच जो हैं, ये बहुत पापुलर हो गये हैं और हर ट्रेन में इसकी डिमांड है कि ए० सी० स्लीपर कोच लगाया जाय। मेरी मुश्किल यह है कि ए० सी० स्लीपर कोच हमारे पास उपलब्ध नहीं है। कोच फैक्ट्री से कहा जा रहा है कि आप जरा ए० सी० स्लीपर कोचेज और अधिक बनायें ताकि बहुत सी ट्रेन्स में जहां-जहां संभव हो सके उसको दे सकें। जहां तक छोटी लाइन की बात है, एम० जी० की, इसमें ए० सी० स्लीपर कोच है ही नहीं, एक भी नहीं है किसी में नहीं लगा है। आर डी एस ओ से कहा गया है कि डिजाइन बनाइये। उत्तर में कहा गया है कि अब डिजाइन कर रहे हैं। छोटी लाइन में इस बात की मांग हुई है कि ए० सी० स्लीपर कोच लगाये जायें। चूंकि वह गाड़ी छोटी होती है इसलिये हमें बनाना पड़ेगा, उसकी डिजाइनिंग की कोशिश करनी पड़ेगी।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : श्रीमन्, . . .

श्री सभापति : नजदीक आ जायेंगे बहुत, फिर मैं कहना नहीं चाहता हूं।

SHRI PILOO MODY: I have never restricted you, Sir, unlike you.

MR. CHAIRMAN: 1 am also.

श्री कमलापति त्रिपाठी : ऐसे स्लीपर कोच बनाने होंगे जिसमें कि पीलू साहब को बैठा सकें ।

(Interruptions)

श्री सभापति : बहुत-बहुत शुक्रिया ।

श्री पीलू मोदी : अपना सेलून बेच दीजिये, नाम हो जायेगा ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : धन्यवाद । मान्यवर, मेरी यह व्यक्तिगत राय है और मैंने रेलवे बोर्ड से कहा भी है, अफसरों से भी कहा है, आर० डी० एस० ओ० के अफसरों से भी मिला था, मेरी व्यक्तिगत राय है कि ए० सी० सी० स्लीपर कोच बहुत पापुलर हो गई है। हर ट्रेन में अगर हम इसको लगा सकें, तो रेलवे की आमदनी भी बढ़ेगी । हम इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि अधिक से अधिक ए०सी०सी० स्लीपर कोच बना सकें हमारी कोच फैक्ट्रीज और धीरे-धीरे करके हम ट्रेंस में उनको लगाते चलें ।

श्री पीलू मोदी : जल्दी-जल्दी करिये, धीरे-धीरे नहीं ।

SHRI N. K. P. SALVE; Sir, my supplementary arises because the main question *inter alia* relates to the provision of quota of berths. Sir, for reservation of berths for M.'Ps. the Ministers are extremely considerate and they go, out of their way to help us. But it is extremely embarrassing to be every time troubling the Minister of State or the Deputy Minister, who are exceedingly helpful in this matter for which we are very grateful to them and which fact we must acknowledge. But in our own right we may ask of the Minister whether in their own right the MPs. could not be categorised as VIPs to be entitled to quota from the intermediate stations in First Class and A.C.C.

श्री कमलापति त्रिपाठी : मैं तो समझता हूं कि मान्यवर यही है । अगर नहीं है तो मैं इसको देखूंगा । मैं मानता हूं कि पार्लियामेंट में मेम्बरों के लिये प्रायटी होनी चाहिये कोटा में ।

श्री सभापति : मिनिस्टर साहब क्वश्चंस में एक यह रूल है कि अपने फायदे के लिये क्वश्चंस न पूछे जाएं । . . . *(Interruptions)* I know, but I am bound to point out to a lawyer like you that there is a rule like this.

श्री एन० के० पी० साल्वे : मैं तो अमूमन प्लेन से सफर करता हूं, मगर यह मेंम्बर आफ पार्लियामेंट को जो दिक्कत होती है . . .

(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Yes, now the last question by you there.

श्री पी० एन० सुकुल : यह सवाल इसलिये मैंने पूछा था कि मैं गोहाटी गया था । उस ट्रेन में कोई भी ए० सी० सी० स्लीपर कोच नहीं था ।

(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: You have already asked the question, please sit down. You cannot again ask a supplementary after yc.u and everybody else has asked. It happened the other day here. Now we go to question No. 245.

Students' memorandum for hostel accommodation in the University College of Medical Sciences

*245. SHRI S. K. VAISHAMPAYEN: Will the Minister of HEALTH ba pleased to state:

(a) whether it is a fact that the students of the University College of Medical Sciences undergoing training at the Safdarjang Hospital have submitted a charter of demands to Government asking in particular about provision of hostel accommodation; and